International Journal of Applied Research 2023; 9(8): 88-90

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(8): 88-90
www.allresearchjournal.com
Received: 04-05-2023
Accepted: 17-07-2023

डॉ. रामखिलाडी माली
स्वतंत्र कलाकार एवं कला अध्येता, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. रामखिलाडी माली
स्वतंत्र कलाकार एवं कला अध्येता, जयपुर, राजस्थान, भारत

रंगों का महत्व

डॉ. रामखिलाडी माली

सारांश
सूर्य की किरणों से हमें सात रंग मिलते है। इन्हीं सात रंगों के मिश्रण से लाखों रंग बनाए जा सकते है। रंगों में एक मानसिक विस्फोट करने की शक्ति होती है यह कहना है चित्रकार रजा का। रंगों द्वारा व्यक्ति के स्वभाव में भी बदलाव लाया जा सकता हैं क्योंकि रंगों में दृश्य या अदृश्य रूप से हमारे भावों को प्रभावित करने की शक्ति होती हैं।

कूटशब्दः अणु–परमाणु, अस्तित्व, विस्फोट, अदृश्य, साहित्यिक दृष्टि, सहस्त्र, विश्वरूप, शीतलता, घोतक, शौर्य, फेंग शुई

प्रस्तावना
किसी भी वस्तु को पहचानने में सबसे पहले रंग ही हमारे सहयोगी होते है नहीं तो हमें इतनी शीघ्रता से मालूम नहीं पड़ सकता की यह क्या है। इन रंगों से ही संसार इतना सुन्दर है कि रंगों को हम हमेशा हमारे सामने देखते है।
हमारी जीवन शक्ति को समरज तथा संतुलित और अनुकूल रखने में रंगों का बड़ा महत्व और योगदान होता हैं शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखने में रंगों की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है। रंग हमारे जीवन में मंगल और शुभ लाने में सहायक होते है। अस्तित्व में मौजूद प्रत्येक वस्तु (अणु परमाणु) कहीं न कहीं हमारे व्यक्तित्व को प्रभावित करते है और प्रत्येक वस्तु में।कोई न कोई रंग अवश्य होता है।
सूर्य की किरणों से हमें सात रंग मिलते हैं। सूर्य से मिलने वाले सात रंग है लाल, नारंगी, पीला, हरा, आसमानी, नीला और जामुनी। इन्हीं सात रंगों के मिश्रण से लाखों रंग बनाए जा सकते हैं। विभिन्न रंगों के मिश्रण से दस लाख तक रंग बनाये जा सकते है। लेकिन सूक्ष्मता से 378 रंग ही हम देख सकते है।
रंग रूपी शब्दों में एक विस्फोट करने के बराबर शक्ति होती है। यह कहना है अमूर्त कला के भारतीय प्रसिद्ध चित्रकार सैयद हेदर रजा का। रंगों की अपनी भाषा है उनका अपना महत्व है उनका प्रभाव एवं भाव ही शब्द है।
रंगों द्वारा व्यक्ति के स्वभाव में बदलाव लाया जा सकता हैं उनसे विचारों में बदलाव लाया जा सकता है। क्योंक रंगों में दृश्य या अदृश्य रूप से हमारे भावों को प्रभावित करने की शक्ति होती है।

विश्वरूपं हरिणं जातवेदसं परायणं ज्योतिरकं तपन्तमप
सहस्त्र रश्मिः शतधार वत्तमानः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः ।

लाल रंगः– प्रसन्नता, उल्लास, उत्तेजना, क्रोध, उष्णताः ऊर्जा, जोश, आर्कषण, शुभ प्रेम खतरा आदि। साहित्य दृष्टि से लाल रंग प्रेम का प्रतिक है, लाल रंग से देश भक्ति और अनुराग की सूचना मिलती है। यह रंग उत्साह, साहस और गतिशीलता को दर्शाने वाला होता है। लाल रंग उत्तेजना बढ़ाना है तथा भावनाओं को उभारता है। क्रोध और खतरे को व्यक्त करने के लिए इसी रंग का सहारा लिया जाता है।
भारतीय परम्परा में लाल रंग को शुभ का प्रतिक भी माना जाता है। विवाह के समय दुल्हन की पोशाक लाल रंग की बनाई जाती है, साथ ही हाथों में सुहाग ही चुड़ियाँ भी लाल रंग की पहनाई जाती है। भारतीय परम्परा में अनेक शुभ उत्सवों, यज्ञों, समारोह आदि के लाल रंग का महत्व है। भरत मुनि के साहित्य शास्त्र के छठे अध्याय में रोद्ध व वीर रस के लिये रक्त वर्ण योजना का उल्लेख है।

लाल रंग ऊर्जा का प्रतीक है यदि लाल रंगों को देखते ही आपका मन मयूर नाच उठता है तो समझिये आप में खुदमालिक बनने की क्षमता है, लेकिन इसमे क्रोध बाधा बन सकता है।

नीला रंग :– शीतलता, सत्यता, आनन्द, रात्रि, आकाश, निराशा, दुख मानसिक अवशाद स्थिरता के भाव।
नीला रंग शांति, भरोसा, खुशी के साथ ही स्पष्टतावादिता को बढ़ावा देने वाला नीला रंग है यह नीला रंग आँखों को आराम देने का काम करता है। मन को शीतल करने व क्रोध को नष्ट करने के लिए मानसिक रोगियों को नीले रंग से राहत मिलती है। वैज्ञानिकों ने अपने प्रयोगों के माध्यम से सिद्ध किया है कि नीला रंग सफूर्ति प्रदान करता है। गहरा नीला रंग पूर्ण शांति का परिचायक है।
वैज्ञानिक अध्ययनों से ज्ञात होता है कि हिमालय की पिघलती हुई बर्फ को नीले एवं सफेद रंगों द्वारा कम किया जा सकता है। नीले रंगों का प्रयोग दवा के तौर पर शांति और दर्द निवारक के रूप में किया जाता है। नीले रंग से असीम विस्तार एवं शांति का बोध होता है।

पीला रंग– प्रफुल्लता, प्रखरता, प्रकाश, चमक, बसन्त समीपता अनुराग आदि का बोध कराता है। आप एक कल्पनाशील प्राणी हैं। आपकी इच्छा दुनिया को बदलने की है। सिद्धान्त रूप में जो सम्भव नहीं भी हो तो आप ऐसे विचार बनाने है। और उसे पूरा करने का ख्वाब देखते है। भले उसे पूरा करने की क्षमता आप में न हो। सर्मीले, दूसरों का समन करने वाले और दूसरों की बुद्धिमता के आप कायल है लोग आप से निःसंकोच होकर अपनी समस्याए और बाते बाट सकते है, क्योंक आप काफी विश्वसनीय हैं।
पीला रंग अद्भूत है इसके मिश्रण से प्रायः सभी रंगों में चमक उत्पनन होती हैं भरतमुनी के नाट्य शास्त्र में अद्भूत के लिये पीत वर्ण की योजना का उल्लेख मिलता है।
पीला रंग : प्रकाश, ज्योति और प्रसन्नता का घोतक है यह रंग प्रसन्नता उत्पन्न करता है इससे प्रकाश और ज्ञान का आभास होता है। यह हमारे भावों को प्रेरित करता है व बुद्धि को प्रखर बनाता है यह सूर्य का रंग कहा जाता है रक्त का संचार बढ़ाता है पूजा–पाठ में पीला रंग शुभ माना जाता है थकान को दूर करता है विवाह के अवसर पर कन्या को पिले वस्त्र देना व विवाह सस्कार में हल्दी व पिला रंग उपयुक्त माना जाता है।

हरा रंगः– शिथिलता, विश्राम, सुरक्षा, मनोहारित, जनन, बसन्त, विकास, प्रफुल्लता आदि।
हरा रंग दो प्रमुख रंगों नीले व पिले का मिश्रित रंग है। अतः इसके अपने गुण एवं भाव के साथ मिश्रित भाव भी होते है। यह रंग शीतलता, स्फूर्ति तथा पुनः जीवन उत्पन्न करने वाला माना जाता हैं हरा रंग वृक्ष, कायाकल्प, पर्टीलिटी और पोषण का प्रतीक है।
हरे रंग का अर्थ है सुरक्षा, प्रकृति, विकास, सद्राव, ताजगी है और प्रजनन क्षमता है, प्राकृतिक गहरे हरे रंग का एक भावनात्मक सुरक्षा की भावना के साथ संबंध है, फेंग शुई के अनुसार हरा रंग परिवार का प्रतिक है।
हरा रंग आप अपने समाज और परिवार के लिए आधार स्तम्भ का काम करता हैं। परम्पराओं और मूल्यों के प्रति आप बेहद संवेदनशील हैं। कई बार इसकी वजह से दूसरो को तकनीफ भी पहुंच जाती है। आपको अपने परिवार से गहरा लगाव है सभी मायने में आप एक शिक्षक की भूमिका में है।

नारंगी रंग– शौर्य ज्ञान वीरता, प्रेरणा, त्याग भक्ति के भाव दर्शाता है। आनन्द रचनात्मकता, मस्ती आदि इस रंग से संचालित होती है।
यह रंग जीवन की शक्ति का संचार व बलवृद्धि का सूचक है। शीघ्र ही चिड़चिडेपन को भी दर्शाने वाला, कलात्मक कार्यो में रूचि रखने वालों को पसन्द आता है।
नारंगी– आपका स्वभाव खिला–खिला है यानि लोगो को आकर्षित करने वाला है आप काम के प्रति लगन शील दायित्वों का निर्वाह करने वाले और सहृदय व्यक्ति है।
नारंगी रंग ऊर्जावान माना जाता है नारंगी तथा पीले रंग का प्रयोग कब्ज दूर करता है, इसके उचित प्रयोग से गुर्दे आदि शुद्ध होने आरम्भ हो जाते है। यह रंग भक्ति भावना का प्रतीक है। अधिकांश ऋषि–मुनि, साधु–संत भगवा रंग के वस्त्रों का उपयोग करते है।

बैंगनी रंग – राजसी, सम्मान, रहस्य, मृत्यु, विलासिता आदि।
प्यार, पूर्वाभास और आराम का प्रतीक है शान महत्व, राजसी प्रभाव को व्यक्त करने वाला यह बैंगनी रंग जितना कलात्मक है उतना ही भावनात्मक भी है।
एक सुलेख और चालाक दीमाग के व्यक्ति है आप किसी व्यक्ति या वस्तु में जो बारीकी दूसरे नहीं देख पाते आपकी नजर उस बारीकी को भी पकड़ लेती है आप सृजनात्मक हैं और शीघ्र ऊर्जा से भी भर जाते है। कला के क्षेत्र में आप बेहतर भविष्य बना सकते है।

गुलाबी रंग– प्रेम, कोमलता, लावण्य, मित्रता आदि।
आप स्वभाव से स्वच्छन्द और नारी सुलभ प्रकृति के हैं। संवेदनशील और भावुक हैं दूसरो की रोक–टोक आपको पसन्द नहीं है जिन्दगी को खुलकर जीने में आप यकीन करते है।
गुलाबी रंग कोमलता और सुन्दरता का इशारा करता है।
गुलाब को सदियों से उसके रंगों की वजह से पसन्द किया जाता रहा है। इसमें भी गुलाबी या लाल गुलाब को सबसे अधिक पसन्द किया जात है। कवियों ने अपनी कविताओं में गुलाबी रंग की अनेक उपमाऐं दी हैं गुलाबी रंग कोमलता और भावुकता का प्रतीक है।

भूरा रंग – स्थिरता, आजादी, ताकत, ज्ञान आदि।
भूरे रंग को पसन्द करने वाले अपनी जवाबदेह का निर्वाह कुशलता से करते हैं। धन कमाने के मामले मे आप चालाक हैं। यानी आपका धन कोई हड़प नहीं सकता है। मोलभाव का गुण आपमें बेहद है।
संस्कार टी.वी. चैनल से सचदेवा जी के अनुसार भूरा रंग ज्ञान का प्रतिक है। यह शिक्षाके लिए लाभकारी रंग है।

स्लेटी = जागरूक, एमझोतापरक
इण्डिगों = याददास्त, ध्यान, ऊर्जा
वायलेट = ईश्वर भक्ति, त्वचा सम्बन्धि रोक प्रतिरोधक क्षमता, तृष्णा में कमी
लाता है।

सफेद रंग – शांति, प्रेम, करूणा, दया, पवित्रता यह रंग एकता, सत्यता, शुद्धता एवं उज्जवलता का रंग है।
सफेद रंग संतुलन, सुरक्षा और आराम का आभास देता है।
काला एवं सफेद एक दूसरे के पूरक रंग है जिस तरह काले रंग कोई रंग नहीं चड़ता इसके विपरित श्वेत रंग पर सभी रंग चढ़ जाते हैं इस रंग को सबसे पवित्र रंग माना है।
सफेद रंग पसन्द करने वालों का व्यक्तित्व मृदुल होता है शान्ति और सहयोग में विश्वास रखते हैं। दूसरों की बुराई को भी आप नजर अन्दाज कर देते है कई बार आपकी भलमनसाहत का लोग नाजायज फायदा उठा लेते है।

विज्ञान श्वेत को रंग नहीं मानता। सफेद रंग परावर्तक रूप से माना जाता है। धार्मिक प्रकृति व शान्ति प्रिय लोग श्वेत वस्त्र ही धारण करना पसन्द करते है ताकि मन निर्मल रहे उज्जवल रहे तथा देखने वाला भी उन्हें देखकर उसके मन में कटुता का जन्म न हो। श्वेत रंग उज्जवलता, विश्व बंधुत्व, सहयोग, शान्ति एकता, सत्यता तथा निष्ठा का प्रतीक माना जाता है।

काला रंग – अंधकार, रात्रि, दुःख भय, शोक, बुराई आदि।
विज्ञान काले रंग को रंग नहीं मानता है, परन्तु साधारण रूप से इसको रंग के रूप में ही माना जाता है। काले रंग को शुभ नहीं माना जाता, परन्तु बच्चों पर इस रंग का टिका नजर से बचाने के लिए किया जाता रहा है काले रंग में अनेक बुराई के साथ कुछ गुण भी है जो सौन्दर्य में वद्धि करते है जैसे आखों का काजल, काले बाल आदि।
सुरक्षा ताकत, आजादी, साहस, काले रंग से जुड़े है।
दुनिया में ज्ञान सागर के जितने भी अक्षर लिखे गये इतिहास लिखे गये वे सब अधिकाशतः काले रंग के ही है कहा जाता है कि काले रंग पर कोई और रंग नहीं चड़ता है।
काले रंग को पसन्द करने वाले दोहरा चरित्र जीते है। रिश्तों में आप इमानदार नहीं रहते । आप में सब कुछ अपने अन्दर समाहित करने की क्षमता है।
सभी रंगों के भाव एवं प्रभाव उसकी मात्रा (अन्य रंगों के मिश्रण और हल्के या गहरे) पर निर्भर करता है। तभी तो एक रंग के अनेक भाव व प्रभाव अलग–अलग होते है।

सन्दर्भ

1. शर्मा डॉ. अमित कुमार ''रंग और होली एच.टी.एम.एल.''
2. पृथ्वी कांकड़ ''कोई विकल्प नहीं है रंगों का'' ांदांकण्वतसकण्चतमेण्बवउ
3. अभिव्यक्ति ''पद्धति रंग चिकित्सा पर आधारित''
4. मानव जयप्रकाश 'रंग सत्य है' वेब श्री काव्य पत्रिका
5. गुप्त संजीव ''चौमासा'' वास्तु समझे रंगो का महत्व
6. शक्ल; रामचन्द्र ''आधुनिक चित्रकला'' कला और आधुनिक प्रवृतियाँ।
7. सांखलकर र.वि. ''आधुनिक चित्रकला का इतिहास'' राजसथान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
8. शुल्क प्रयाग ''कला सम समाज'' ललित कला अकादमी, नई दिल्ली।
9. स्वामी ई. कुमारिल ''भारतीय कला और कलाकार''।
10. चतुर्वेदी डॉ. ममता ''सौन्दर्य शास्त्र'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।